

गुणेश्वर
शिवशक्ति

2581

ASHA ARCHIVES



२७ नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ यथेष्टं नमः
 ध्यात्वा नमः ॥ यथा गङ्गा यथा विधि
 गच्छेत् ॥ यथा वासः ॥ धूमिः ॥ ॐ नमः
 दीप्तिं कुरु ॥ अद्भुतं बालं यथा ॥
 कनकं यथा काः ॥ यथा यथा का
 कुरु ॥ यथा नखं यथा गङ्गा ॥ धूलं
 यथा ॥ वज्रं ॥ वनिता ॥ यथा ॥
 यथा ॥ मृता ॥ निनिधु ॥ यथा ॥
 निनिधु ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥
 नमः ॥ अथा ॥ मकायु ॥
 यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥

पूजावर्णे ॥ पद्मपात्रनयाव
क ॥ आओमानः सगक्रो ॥ अथा
दि ॥ वाक् ॥ श्रीश्रीनृनयश्च नम
स्ते

अ० लं० रु० र्दं० च० वचालपूजाः
 निमिनि ॐ वक्राऊनीयमय
 यामि॥ इ० सीवनामलगाय
 नृत्तश्रवणगण॥ सिधिनकु
 क्यालनरुद्रादि॥ ॥ इ० न
 नमस्का० न० अनयज० अ० य०

वाजः० रुगसुद्धिः० आत्मपूजा॥ श्री
 सिवगानः० आवाहन॥ सनानः
 यचाभुगन॥ धनवह्निन॥
 अखनभय॥ चीनः० सिन्धन
 दीप्तीः० आशमकाः० अद्भुत
 धनकु॥ कन्नपगाकाः० य
 वयका॥ खभ॥ वनीधायः०
 नासियः० सुयोधाय॥
 अनुनामस्कान॥ रुलपाजः०
 अर्घ्येयाः० रुगसुद्धिः० आ
 मयजा॥ आवाहन॥ दीर्घ
 वनिविय॥ रुवः० वाखनः०
 खवः० अखनपूजा॥ मूल
 कनपूजा॥ जियाईनिः० व
 उंनानसीपूजयन्॥ अमन
 नीवनी॥ ॥ वल्गावन॥ ध
 यः० दीपः० नैधयः० जायः० अ
 न॥ वधपूजा॥ पसुनयोन
 समयकुय॥ दखिनायाचक
 सयनकुय॥ धनकीकाया
 सकनफाडविय॥ समयविय
 वनिः० अय॥ ॥

शिवावयावः० अस्सालक्ष॥
 दवसाभः० मष्टनदयक॥
 धमादनः० धायः० गलः० द
 अस्तः० रुवः० वक्रः० रुवः० रि
 खवः० वक्रनिः० खवः० रि
 सियः० आस॥ जियाईनिः०
 सनायाः० सकनकि॥ नृशः०
 धनमूनन॥ धयः० दीपः०
 रुवः० अशसनायाः० सी
 ददायकाः० धन॥ ज्ञास
 रुयः० गानः० वक्रनिः० रि
 यनादवज्ञाचक॥ ॥

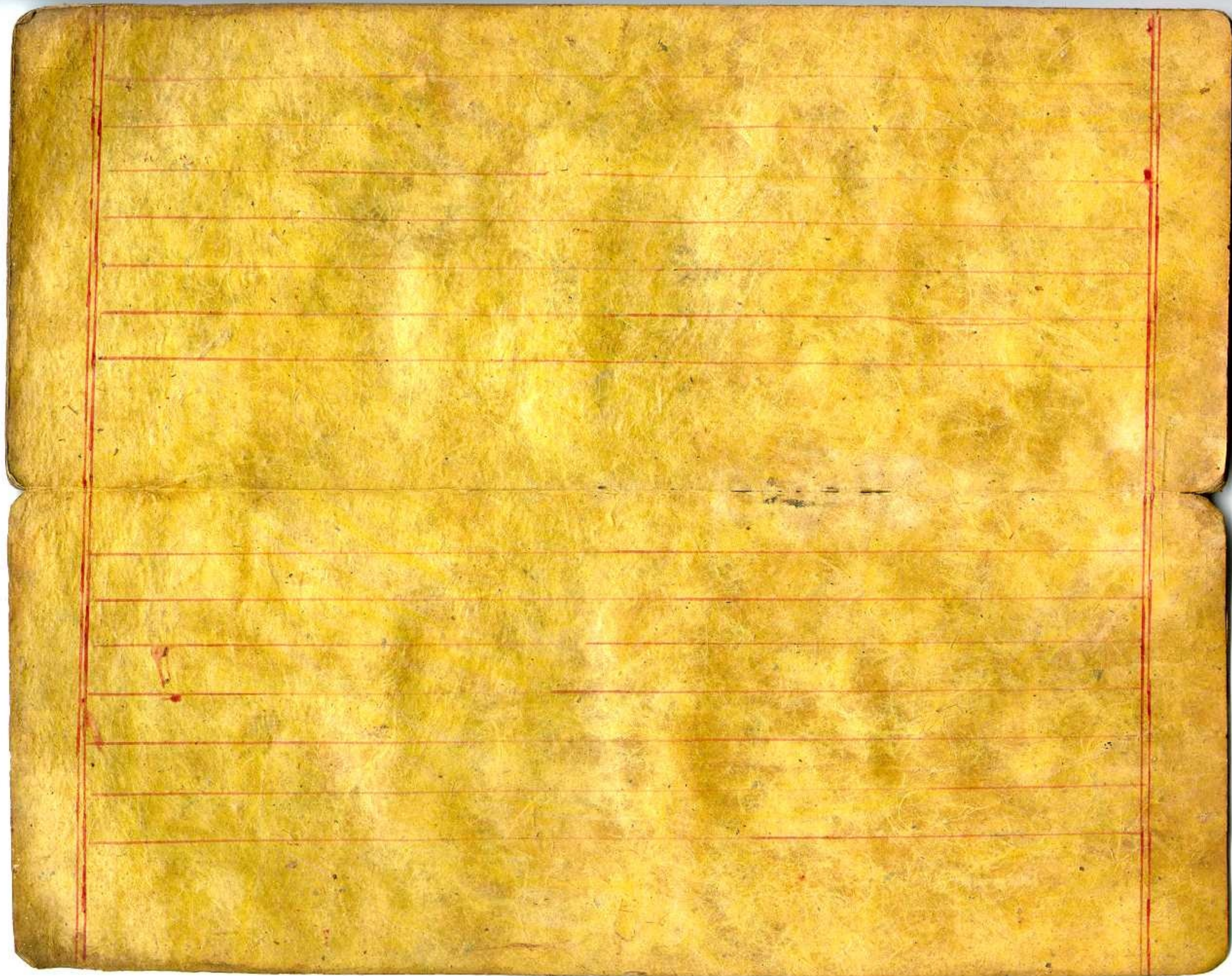
० धोवलसिगयागदयकः०
 पूजाशानदयः० उथद॥ रु
 वगवनिवाः० राः० वखानः०
 दाक्षीनः० ॥ ८॥ दयकः० का
 वनकाः० सयनः० मगरुः० गा
 लवः० आनरीः० अकनः० धया
 स॥

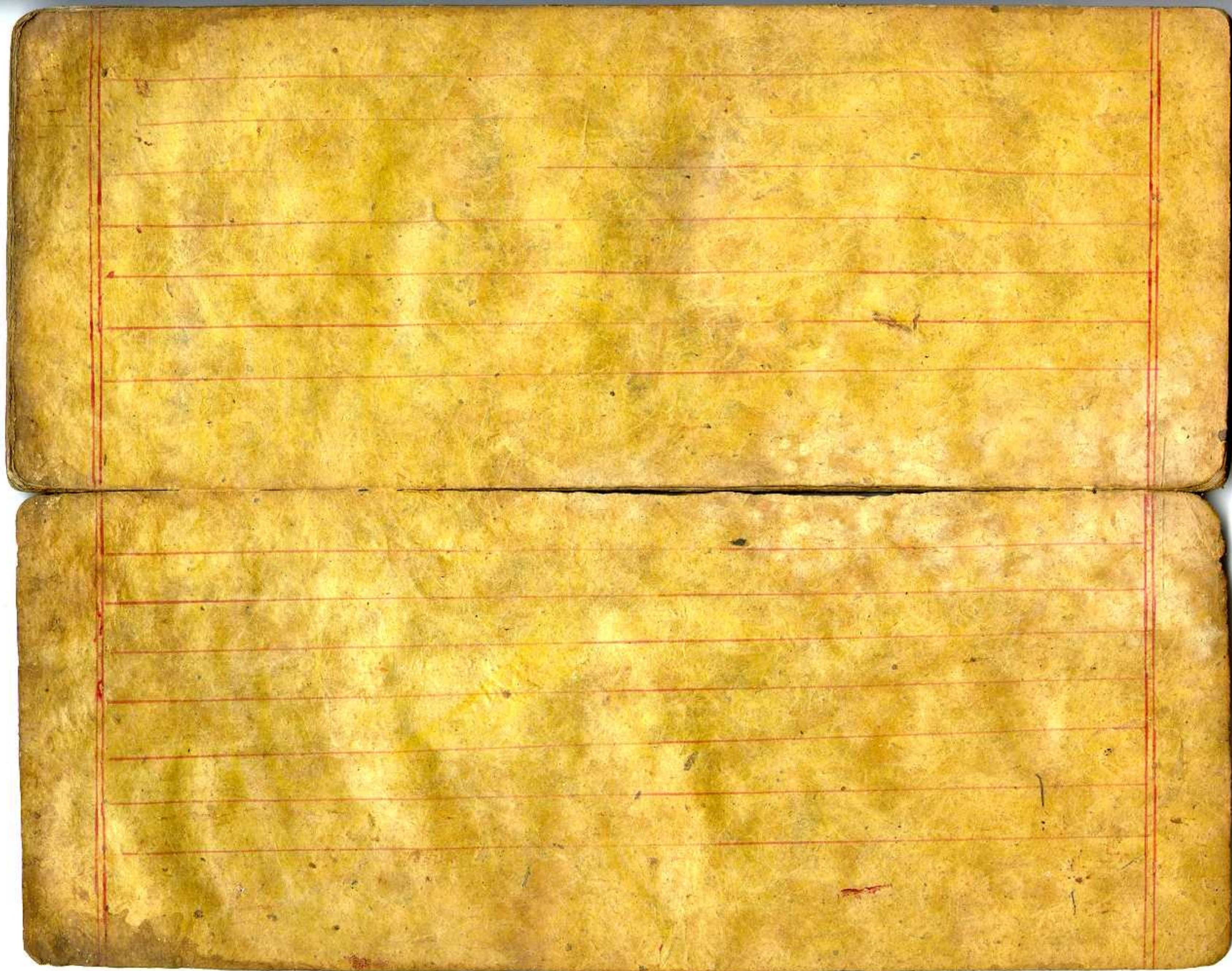
संयोजक

एवमृत्ता नयाचक ॥ अथा
दि ॥ वाक ॥ इति नृपश्वल
महासिन्धुः अमुकनामनाटक
स्यैवार्थानि सिद्धिः नदयानिः मनसिद्धि
यथा यचालयुजानिमित्तार्थः य
थैराजर्नसमययामि ॥ इति सर्वे
क्रोः नृपश्वनयागज ॥ सिद्धि न
कुः यादि ॥ शुभनमस्काना ॥ नवा
मान्यास ॥ रुनयाजः अर्थेयाजः रु
नसिद्धिः अमुकज ॥ ॥ समान
रुनार्थेया ॥ चीनः सिन्धुनः दीप्ति
रुजामकोः अद्वानः सानः क
नयनः यैवैयका कय ॥ उर्थ
वनिवाय ॥ नासिय ॥ स्योद्य
याय ॥ शुभनमस्कानः रुनया
जः अर्थेयाजः उर्थेयाजः
य ॥ अवाहन ॥ मानानि ॥ यैव
वनिविय ॥ रुय ॥ अज ॥ रुमिथो
यैवैयादि ॥

१॥ शुभनमः ॥ अवात्मानं यैवैमा स्मान् द्वा तं चानं यागं दानं नृप
प्रातधिकं नृप प्रातधिकं शिवसासनं ४ शिवसासनं ४ ॥
यानुददं गदं नाथं स्वमं हा गं दु किमं किं । यैवैमि गं रु स्य कल
७ नृप प्रातधिकं शिवसासनं २ ॥ २ ॥







नामधन साकुल

258/

गद्यशत. मं. १
सिद्धिदायकी सि.
शुद्धिदायकी सि.

सिक्कि कथा पावः सगल
 नासा नावदयः सिक्कि कसन
 यः सिवदायदकोऽथ नः न
 वकु नादिः लाइनक्राः वनि
 वियः सर्वविनिद्वयथा र्या
 दिः अर्घ्यपात्रादकनः॥ अ
 सुभर्गः पाकणीः निनिः
 क्रनादिः वतु सदक्रानः॥ स
 डवनीः वायः वृष्टिः धिभन
 सज्जनः भादनिः स्वानविय
 थगधनडावः वीगतः गाहा
 सः सिक्कि कथा यः॥ यजनीः नि
 राडधनः मूलखंडं जगर्षिः
 यजनीः॥ आवादिः वलुना
 क्रुण्णय्यनिमः॥ । क्रोय
 वीथिसाकूनः॥ गानः॥ क्रुवः
 रुनिः॥ खवः वरुनिः॥ क्रुवः
 सिः खवः सिः॥ क्रुवः जमः॥
 कानः॥ नवक्रायः॥ थगः क्रो
 यविधिः॥
 थनाद्यावनः क्रायः॥

गानः यजनीः॥ ऊं क्रुवः गव
 नीसमः के वग नाथपाद
 कीः॥॥ वक्रनः॥ ऊं क्रुवः
 नुलाथवक्रनिपादकीः॥ क्रुवः सि
 ऊं क्रुवः सिमलु नाथपाद
 कीः॥ खवः सिः॥ ऊं क्रुममा
 लाकानाथपादकीः॥ जमः
 मूलनः॥ ऊं क्रुवः वीनिपाद
 कीः॥

१ नासिय ३ ॥ संकल्य वाक ॥ शांतिः ॥ धनं विप्रैः ॥ यज्ञा मर्हं कनिष्ठा ॥ आः
सनसथान ॥ शुभस्थानम ॥ विश्वेश्वनाय नमः ॥ अनन्ताय नमः ॥ अरुणानि मि
ना च स्यः ॥ शानां लसलाकया ॥ वरुणमिनिर्गन्त ॥ तस्मिंश्चा शुभेनमः ॥ शु
भस्थानम ॥ यनमः शुभस्थानम ॥ यनमावाञ्छी शुभस्थानम ॥ यनमीषी शुभस्थानम
यः सावन ॥ न दहन ॥ लयाव ॥ वरुणि अमृतविर्क ॥ या एषाम ॥ जी ॥ हस
॥ साह ॥ यानय निष्ठा ॥ अजीक्याय नमः ॥ वसुदेवसु ॥ ममया एषां गत्या
गस्य सुखं विलं निष्ठा ॥ या एषाम ॥ न्यास ॥ आशुष्टिका स्थी नमः

जीर्णानि स्थी नमः ॥ ह्रमथमा स्थी नमः ॥ दे अनामिका स्थी नमः ॥ जी कनिष्ठा
स्थानम ॥ ऊकलगना स्थी नमः ॥ ऊरुदयाय नमः ॥ जी शिनसनमः ॥ ह्रसिवाय
नमः ॥ ऊकववाय नमः ॥ ऊ अस्काय नमः ॥ ॥ ऊलयाग यज्ञा ॥ ऊनयाग सनायः
नमः ॥ वरुणयन यज्ञा ॥ आवाहनादिः ॥ अत्र मुद्रा ॥ अर्धयाग यज्ञा ॥ अर्धयाग सना
यनमः ॥ सुसु सुसु सुसु यनमा मृत् अर्धयाग यनमः ॥ वरुणयन यज्ञा ॥ आवाहना
दिः ॥ आनि मुद्रा ॥ नदी शांति ॥ न वन्दनं नमः ॥ अरुर्गनमः ॥ सिंधुलीनमः ॥
पूर्यनमः ॥ देवसुः आसन गेय ॥ ॥ आश्विनसक यनमः ॥ यद्रासनाय नमः ॥ अः

न॥ उद्यदि नद्विविद् किलिगां॥ रुंग कृ ची नयन रुय यूका॥ समनमूखी वलदां कृडा॥
याऽऽशी गिकली॥ यऊ रुवनाडी॥ जी श्वान पृथं नम॥ वलि सं गय॥ अवाहन॥ स्म
यन॥ संनि श्वान॥ संनि लाधन॥ अकृणु न॥ सकनिकनन॥ अघाऊ यनय॥ याघ
नम॥ ज्ञान॥ वदन॥ सिंदन॥ पृथं॥ धूप॥ दीप॥ पूजा॥ अस्मष्टी रुवनी श्वनी
मनुस्ये शाकि निषिगा यगि कृद॥ रुवनी श्वनी दिवगादी विऊ॥ ॐ शाकि ॥ लकिल
कं॥ मम सदा सी वृ सि श्वान थ वि नि या गा॥ जी रुवनी श्वनी शा याइ कां पूजया मि ॥ ३॥
धनं व नि गृ द्र ॥ स्वाहा॥ ऊयाय नम॥ विऊ या य ॥ अऊि नाय ॥ अय नाऊि नाय

॥ नि स्याये ॥ विलासि ये ॥ दा ल्बे ॥ अघा नाय ॥ मंग नाय नम ॥ पूर्व का ण आदि
नैष द्धान संयूजा या य॥ वक्र नंग यगी सदि नाय नम ॥ विष्णु सा वि गि सदि नाय नम ॥ नूडा
यसन सवि सदि नाय ॥ कृव नाय मलाल श्री सदि नाय ॥ मद नाय नगि सदि नाय ॥ विष्णु
स्व नाय पिया सदि नाय ॥ थरु द्धा ण पूजा॥ वलि गृ द्र ॥ स्वाहा॥ अकृणु य पूजा॥ अर्नंग
कृसमाये नम॥ अर्नंग कृसमा उ नाये नम ॥ अर्नंग मद नाये नम ॥ अर्नंग मद ना उ नाये
नम॥ गगन वग्ग ये ॥ शा डि न स्वाये ॥ गगन नैषाये ॥ थनं वलि गृ द्र ॥ स्वाहा॥
षाद शा यगु पूजा॥ कलाये ॥ विक नाये ॥ उमाये ॥ सन स्वये ॥ शा ये ॥ काये ॥ न

वाये२॥ लम्बे२॥ शरथे२॥ सुथे२॥ धृथे२॥ श्रधये२॥ मधये२॥ मथे२॥ काथे२॥
 आथोये२॥ थनंवल्लिगृह्ण२॥ स्वाहा॥ वृन्दादिदशनाकपालस्था२॥ वलिगृह्ण२॥ स्वा-
 हा॥ त्रैलोक्यपद्मासनाय२॥ पादकां॥ नकुसीपादकां॥ थनंवलि॥ वाकमहावलि॥
 क्राकृगपानायवलिगृह्ण२॥ स्वाहा॥ वावदकनाथायवलिगृह्ण२॥ स्वाहा॥ सुसिद्धिवा-
 म्पुष्पनीवलिगृह्ण२॥ स्वाहा॥ सर्वथाकृगस्थापिष्ठावस्था॥ सर्वथावृन्दावस्था॥
 थावृन्मीयूजावलिगृह्ण२॥ स्वाहा॥ आवाहनादियानिमृदादष्टाय॥ नमः॥ नमः॥ नमः॥
 नाथायनम॥ नमः॥ सिद्धिनाथाय२॥ नमः॥ कूर्जिनाथाय२॥ नमो नमः॥ ज्ञाय ज्ञी स्वाहा॥

१०॥ नकुसीपादकां॥ १०॥ सुति॥ अरुणानगिनाथ्यादि॥ जीयनदागि सुवनक शुवसुदानि
 दर्वीष्टिवयिरुवनगसुखालः॥ वायाविनिगिसमनाः॥ वृन्दिगुलनिः॥ निकिगि॥ वाकामिः॥
 कमलनिः॥ कमलावलीनिः॥ सुकानिगुक्तगाकावः॥ गृह्णानासिकृगैर्यः॥ सिद्धिरुवगुः॥
 भदवीः॥ चयसादामदृष्टवलि॥ अगगधादि॥ नमः॥ जीअसुयदुद॥ स्वस्मनमृदादष्टाय
 न॥ नासिय॥ साविथाय॥ कृअन पुसाविनिष्ठासूर्योययर्थनमः॥ सुवनध्वनीयायदः॥
 निसमाय॥ १॥ १॥ नासिय॥ १॥ नकु सुवनमस्तान॥ अरुवपुमपुलाकानस्यादिः॥
 यद्मासनाय२॥ अद्ययागसय२॥ कृमासनायपादकां॥ वर्यर्यर्य॥ वनमकृनया

दि॥ अस्माय रुद्र॥ आदय २॥ जी शिन॥ दसिखाय॥ ऊक वयाय॥ आनन॥ अन अस्मा
 य रुद्र॥ अनयाग॥ अर्घयाग वृजा॥ आत्मयुजा॥ श्री सर्वलोचन॥ आवाह॥ पुत्रननम ७३
 लः श्री आदिदेवयादकीः पूजयामि॥ असनादिः त्रिदव ३॥ कृष्णः गङ्गा नी॥ वदकः दधे
 गणः गरुमूर्त्ति॥ शुद्धी श्री लवनयद्रुद्रवरासनाययादकी॥ अक्षतशक्ति ययाद
 की॥ अननासनाययादकी॥ कदासनाययादकी॥ नानासनाययादकी॥ यगासनाय
 यादकी॥ केशालासनाययादकी॥ कर्णसनाययादकी॥ यद्रासनाययादकी॥ ध्यान
 वरुमहागङ्गा मयिलक्ष्मीः नमिका ययुगयरा॥ यववक्रादश रुद्राः त्रिपवानयः

नेशगा॥ श्वेतवर्णमहादेविः प्रगायनिसुसंस्तिगा॥ मातृकाष्टकमधुसूक्तः सिद्धिया
 गिनियुक्तिगा॥ दानिगाश्च ललितानी॥ दालायष्टगङ्गा॥ उक्तासक्तसयाग्नः बाल
 यन्त्रलयवर्णन॥ कवित्स्त्रुक्तविद्याल्यः अगगावायवर्णन॥ गमनाश्वरुनलीयुक्ताः
 मृत्तगन्धविरूषिगा॥ यासाक्षुषणादवीः बलदारुययाणिनी॥ सर्वहर्षवृत्तैर्वर्णनं
 अक्रौरकालका॥ वामेश्वराक्षमृत्पूयः दक्षिणेश्वरलमूर्त्तिमी॥ अयनकदलीनोदः सयद्रुः
 कसकसंबः मण्डुलानिगसादकी॥ वामेश्वकलसंदिशः महानत्तययुनिगी॥ एवायुर्षीगिनाः
 देवीः उरुमाया मदरुगा॥ सानकानकरुदनः विश्वयाय यवस्तिगा॥ यर्षीगिनामहादेवी

सिद्धिलक्ष्मीजयप्रदा॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वन्देऽस्मिन्मन्त्रे ॥ गायत्री ॥ ॐ श्रीसिद्धिलक्ष्मीदेवी ॥ विद्महे नवत्याधामदे ॥ नमो नमो लयवा
यातु ॥ वलि ॥